

Date : 2 मार्च 2023

सकल घरेलू उत्पाद व आंकलन

संदर्भ- हाल ही में भारत की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर अक्टूबर दिसंबर 2022-23 में तीन तिमाही के नीचले स्तर 4.4 % पर पहुँच गई। और यह लेख सकल घरेलू उत्पाद व उसके आंकलन से संबंधित है।

सकल घरेलू उत्पाद- किसी देश की सीमा के भीतर किसी विशिष्ट समय सीमा में उत्पादित सभी सेवाओं व उत्पादों के कुल बाजार मूल्य देश का सकल घरेलू उत्पाद है। इसे देश के कुल उत्पादन द्वारा प्राप्त आय या 1 वर्ष में उत्पादन पर आए व्यय के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। वार्षिक रूप से किए गए आंकलन के डेटा को मूल्य परिवर्तन व शुद्ध मुद्रा स्फीति के लिए समायोजित किया जाता है।

सकल घरेलू उत्पादन के मापन का निर्धारण-

सकल घरेलू उत्पाद = उपभोग + सकल निवेश + सरकारी खर्च + (निर्यात-आय)

या $GDP = C + I + G + (X - M)$

- उपभोग C = व्यक्तिगत घरेलू खर्च (नए घर को शामिल नहीं किया जा सकता)
- सकल निवेश I = व्यवसाय या घर के द्वारा पूँजी में लगाए जाने वाले निवेश को परिभाषित किया गया है।
- सरकारी खर्च G = सरकार द्वारा निवेश किए कर्मचारियों के वेतन व अन्य सेवाओं पर सरकारी खर्च।
- निर्यात X = वह उत्पाद जो विदेशों के लिए उत्पादित किया जाता है जो निर्यात किया जाना है।
- आयात M = वह उत्पाद जो देश की आपूर्ति के लिए विदेशों से खरीदा जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद GNP- सकल राष्ट्रीय उत्पाद देश की कुल आय का आंकलन करता है इसमें सकल घरेलू उत्पाद के साथ साथ विदेश से होने वाली आय को भी संयोजित किया जाता है।

जीएनपी और जीडीपी बहुत निकट संबंधी अवधारणाएं हैं, और उनके बीच मुख्य अंतर यह है कि GDP में विदेशी निवासियों के स्वामित्व वाली कंपनियां हो सकती हैं जो देश में माल का उत्पादन करती हैं, और GNP में घरेलू निवासियों के स्वामित्व वाली वे कंपनियां जो दुनिया के लिए भी माल का उत्पादन करती हैं।

सकल घरेलू उत्पाद को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है नाममात्र जीडीपी और वास्तविक जीडीपी।

नामिनल जीडीपी- आर्थिक व्यवस्था में देश के आर्थिक उत्पादन का आंकलन करता है इसकी गणना में वस्तुओं और सेवाओं की तत्कालीन कीमतों को शामिल किया जाता है। यह विकास के आंकड़ों को बढ़ाने में मदद करता है। यह प्रतिवर्ष वस्तुओं और सेवाओं की संख्या में वृद्धि के बजाय कीमतों में वृद्धि को प्रदर्शित करता है।

नाममात्र जीडीपी = उपभोग + सकल निवेश + सरकारी खर्च

साल-दर-साल नाममात्र जीडीपी बढ़ने से उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की संख्या में वृद्धि के विपरीत कीमतों में वृद्धि हो सकती है। यदि सभी कीमतों के एक साथ बढ़ने को मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है। मुद्रास्फीति आर्थिक प्रतिभागियों के लिए एक नकारात्मक शक्ति है क्योंकि यह उपभोक्ताओं और निवेशकों दोनों के लिए आय और बचत की क्रय शक्ति को कम करती है।

वास्तविक जीडीपी- वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद एक व्यापक आर्थिक आँकड़ा है जो एक विशिष्ट अवधि में एक अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापता है। वास्तविक जीडीपी को आधार वर्ष के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसे स्थिर जीडीपी भी कहा जाता है। वास्तविक जीडीपी दो वर्षों की जीडीपी की तुलना करने में सहायक होता है जो दो वर्षों में उत्पादों के मूल्य में परिवर्तन की तुलना करता है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, सकल घरेलू उत्पाद की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रदान करता है, जिसमें वास्तविक जीडीपी की वृद्धि का प्रतिनिधित्व करने वाले आँकड़े प्राप्त होते हैं जिससे वास्तविक जीडीपी, नामिनल जीडीपी से अधिक सटीक आर्थिक विकास के आँकड़े प्रदान करता है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय NSO

देश के समस्त सांख्यिकी डेटा के समन्वय के लिए NSO की परिकल्पना रंगराजन आयोग द्वारा की गई। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, कम्प्यूटर केंद्र को संयुक्त कर केंद्रीय सांख्यिकीय कार्यालय की स्थापना की गई। NSO का कार्य राष्ट्रीय खातों को तैयार करना, सरकारी व निजी व्यय, पूँजी निर्माण व बचत, पूँजी स्टॉक के अनुमान, निजी पूँजी की खपत के वार्षिक अनुमान को प्रकाशित करना है।

जीडीपी के आंकलन में अपस्फीति की भूमिका-

अपस्फीति, वस्तुओं या सेवाओं के मूल्यों में गिरावट को दर्शाती है। जब देश में वार्षिक मुद्रा स्फीति की दर शून्य प्रतिशत की दर से भी नीचे गिर जाती है तब अपस्फीति होती है। इसे

नकारात्मक मुद्रा स्फीति दर भी कहा जाता है। जीडीपी के आंकलन में अपस्फीति का प्रयोग किया जाता है।

किसी उद्योग के वास्तविक मूल्य वर्धन का अनुमान लगाने के लिए दोहरी स्फीति का प्रयोग किया जाता है। दोहरी अपस्फीति पद्धति में, वास्तविक मूल्य वृद्धि को वास्तविक सकल उत्पादन और वास्तविक मध्यवर्ती आदानों के बीच के अंतर के रूप में मापा जाता है। दोहरी अपस्फीति, वास्तविक मूल्य वृद्धि की गणना करने की विधि है क्योंकि इसमें सकल उत्पादन और मध्यवर्ती आदानों के बीच संबंधों के बारे में कम अवधारणाओं की आवश्यकता होती है।

स्रोत
इण्डियन एक्सप्रेस

गुंजन जोशी

